उसने फ्रांसीसी सैनिकों की ओर देखा.

बड़े लोगों का बचपन

नेपोलियन बोनापार्ट

बहादुर फ्रेंच जनरल

नेपोलियन बोनापार्ट एक खुशमिजाज छोटा लड़का था. वो अपने माता-पिता और भाई-बहनों के साथ अजैक्सियो के एक पुराने घर में रहता था. उसके पिता एक आकर्षक, सरल स्वभाव के व्यक्ति थे और उनकी माता युवा और सुंदर थीं. उनके घर में कई रिश्तेदार भी रहते थे. वहां बच्चे बचपन में चलने के साथ ही घुड़सवारी भी सीख जाते थे. हर दिन वे अजैक्सियो के आसपास के ग्रामीण इलाकों की खोज में घंटों बिताते थे. उन्हें अपने द्वीप कोर्सिका से बेहद प्यार था! पहाड़ की ढलान पर उगने वाले मेंहदी, लैवेंडर और फूलों की झाड़ियों से वहां की हवा में एक जादुई खुशबू थी.

अक्सर लड़के स्थानीय मछुआरों के साथ नाव में सवारी करते थे. लेकिन कभी-कभी जब वे घाट पर जाते, तो उन्हें बंदूकें सुनाई देतीं थीं और वो देखते कि वहां फ्रांसीसी तोपबाज़ फायरिंग का अभ्यास कर रहे थे. तब वे बाहर नहीं जा सकते थे. उसकी बजाए, नेपोलियन फ्रांसीसी सैनिकों की बढ़िया वर्दी और चमचमाते हथियारों को टकटकी लगाकर देखता था, और उनपर मोहित होता था.

वो करीब छह साल का था जब उसे पता चला कि वे सैनिक वहां क्यों थे. अपने माता-पिता की बातें सुनकर उसे पता चला कि फ्रांसीसी आक्रमणकारी थे. सालों तक कोर्सीकन्स ने उन्हें बाहर रखने के लिए कड़ा संघर्ष किया था. यहाँ तक कि उसकी माँ भी, जिनकी तभी शादी हुई थी और वो केवल 14 वर्ष की थीं, वो भी लड़ाई में शामिल हुई थीं. अपनी शादी के दो दिन बाद वो अपने पति के साथ पहाड़ों पर गयीं. वहाँ उन्होंने घायलों की देखभाल की और बंदूकों में बारूद भरा!

अब कोर्सिका फ्रांस के आधीन था, और वे सभी फ्रांसीसी नागरिक थे. पर उनके दिल में फ्रांस के लिए प्रेम नहीं था! वे खुद को पहले कोर्सीकन और फिर इटालियंस के रूप में सोचते थे. वो जो बोली बोलते थे वो भी इतालवी थी. उनका रूप-रंग और रहन-सहन भी इतालवी ही था. जब नेपोलियन ने इस बात पर विचार किया तो उसे फ्रांसीसी दुश्मन लगे. खैर, वो जल्दी से बड़ा होगा, एक सैनिक बनेगा और फिर उनसे बदला लेगा!

एक दिन उसकी माँ को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसने उसे सफेद डबलरोटी वापस रख दी और वो कुछ मोटी काली डबलरोटी खाने लगा. माँ ने पूछने पर नेपोलियन ने शांति से कहा: "क्योंकि मैं एक सैनिक बनने जा रहा हूं, मुझे इसकी आदत डालनी चाहिए."

फिर, जब वो नौ वर्ष का हुआ, तब नेपोलियन की सुखी दुनिया बिखर गई. फ्रांसीसी सरकार ने गरीब कोर्सीकन के बेटों को मुफ्त शिक्षा देने की पेशकश की और उसके माता-पिता उससे बहुत खुश हुए. फिर नेपोलियन और उसके बड़े भाई जोसेफ को फ्रांस भेज दिया गया.

जाने के दिन जोसेफ फूट-फूट कर रोया, लेकिन नेपोलियन ने अपनी भावनाओं पर काबू रखा. लेकिन जब वे स्कूल गए तो नेपोलियन रात में जागता था और अपने परिवार के लिए तरसता था.

बेचारा नेपोलियन कभी भी लोकप्रिय नहीं हुआ. वो छोटा, पतला और बीमार दिखता था. सबसे पहले, उसने फ्रेंच सीखने या अपना नाम - बोनापार्ट, फ्रेंच तरीके से बोलने से इनकार किया. जब उसे दुश्मन की भाषा सीखनी पड़ी तो उसने वो इतने मजबूत कोर्सीकन उच्चारण में बोली कि फ्रांसीसी लड़के हंस पड़े.

नेपोलियन गणित में इतना अच्छा था कि उसने दो साल बाद एक मिलिट्री स्कूल में छात्रवृति जीती. फिर उसे जोसफ को छोड़कर अकेले ब्रिएन जाना पड़ा.

मिलिट्री स्कूल में.

वो पतला और बीमार लग रहा था.

अब तक घर में छह बच्चे थे जिन्हें खिलाना और पढ़ाना था और परिवार पहले से कहीं ज्यादा गरीब था. नेपोलियन को अमीर लड़कों के बीच खुद को जर्जर दिखाने से नफरत थी. सैन्य अनुशासन कठिन था, इसलिए वो अपनी परेशानियों को भूलने के लिए देर रात तक काम करता था.

फिर उसके पिता की मृत्यु हो गई. 15 साल के नेपोलियन ने यह खबर सुनते ही कहा, "महिलाओं को रोना चाहिए, लेकिन पुरुषों को दुःख सहना आना चाहिए. मैंने मौत के बारे में पूरी ज़िंदगी सोचा है." लेकिन उसने अपनी माँ को एक बहुत ही कोमल पत्र लिखा, जिसमें उसने अपने प्यारे पिता के नुकसान की भरपाई करने का वादा किया.

अब नेपोलियन को लगा कि उसे घर की देखरेख के लिए कमाना होगा. उसने अपनी परीक्षाएं शानदार ढंग से उत्तीर्ण कीं और सोलह वर्ष की आयु में वो फ्रांसीसी सेना में लेफ्टिनेंट बन गया. छुट्टी मिलते ही वो घर के लिए निकल पड़ा.

जब उसकी माँ उसे घाट के किनारे मिलीं तो वो हैरान रह गईं! अपनी चमकीली फ्रेंच वर्दी में वो दुबला-पतला और बीमार लग रहा था. उसके गाल खोखले थे, उसके बाल झड़ रहे थे. एक साल तक वो अपनी मां की मदद करने के लिए कोर्सिका में रहा.

उसके बाद वो अपने परिवार के लिए प्रसिद्धि कमाने और अपना भाग्य आज़माने के लिए वापिस गया. अंत में वो उस देश का सम्राट बना जिससे उसे बेहद नफरत थी!